व्याकरणं रचना च

(क) प्रत्याहाराणां परिचयः - प्रत्याहार का अर्थ है संक्षेप । संस्कृत के वर्णों को संक्षेप में समझने के लिए वैयाकरण पाणिनि ने प्रत्याहारों का अपने सूत्रों में प्रयोग किया है। प्रत्याहारों का आधार उनके चौदह सूत्र हैं जो क्रमशः स्वरों और व्यञ्जनों को गिनाते हैं। यहाँ इन सूत्रों को स्मरण रखने से प्रत्याहारों का निर्माण किया जा सकता है, प्रयुक्त प्रत्याहारों में कौन-कौन वर्ण हैं, इन्हें समझा जा सकता है ।

स्वरवर्ण के सूत्र - अ इ उ ण् । ऋ ऌ क् । ए ओ ङ् । ऐ औ च् । (कुल चार सूत्र)

व्यञ्जनवर्ण के सूत्र– ह य व र ट् । ल ण् । ञ म ङ ण न म् । झ भ ञ् । घ ढ ध ष् । ज ब ग ड द श् । ख फ छ ठ थ च ट त व् । क प य् । श ष स र् । ह ल् । (कुल दस सूत्र)

वर्णमाला विषयक इन सूत्रों को प्रत्याहारसूत्र कहा जाता है । अण् प्रत्याहार कहने से अ इ उ –इन तीन वर्णों का बोध हो जाता है । अच् में सभी स्वरवर्ण तथा हल् में सभी व्यञ्जनवर्ण आ जाते हैं । इसीलिए अजन्त (अच् या स्वर से अन्त होने वाला) तथा हलन्त (व्यञ्जन से अन्त होने वाला) इन शब्दों का प्रयोग किया जाता है ।

प्रत्याहार दो वर्णों का होता है । उसमें दूसरा वर्ण हलन्त रहता है जो चौदह उपर्युक्त सूत्रों में से किसी के अन्तिम वर्ण के रूप में होता है–ण्, क्, ङ्, च्, ट् इत्यादि । प्रत्याहार का पहला अक्षर किसी दूसरे वर्ण के रूप में होता है । जितने वर्णों को हम निर्दिष्ट करना चाहें उतने वर्ण प्रत्याहार में आ जायेंगे । बीच वाले हलन्त को छोड़कर बीच के सभी वर्ण प्रत्याहार में समाविष्ट होते हैं । जैसे अक् कहें तो अ, इ, उ, ऋ, ऌ ये पाँच वर्ण आ जायेंगे । जैसे जश् कहें तो ज, ब, ग, ड, द–ये सभी तृतीय वर्ण समाविष्ट होते

हैं। इस प्रकार वर्णसमूह को प्रत्याहारों द्वारा निर्दिष्ट किया जाता है। पाणिनि ने कुल 42 प्रत्याहारों का प्रयोग अपने व्याकरणग्रन्थ (अष्टाध्यायी) में किया है। यहाँ सुविधा की दृष्टि से कुछ प्रत्याहारों और उनके अन्तर्गत आए हुए वर्णों को देखा जा सकता है–

अण् – अ, इ, उ

अक् – अ, इ, उ, ऋ, ऌ

इक् – इ, उ, ऋ, ऌ

एङ् – ए, ओ

एच् – ए, ओ, ऐ, औ

ऐच् – ऐ, औ

खर् – ख, फ, छ, ठ, थ, च, ट, त, क, प, श, ष, स

जश् – ज, ब, ग, ड, द

यण् – य, र, ल, व

अभ्यासः

1. **प्रत्याहार किसे कहते हैं ? सोदाहरण समझाएँ।**
2. **निम्नांकित प्रत्याहारों में समाविष्ट वर्णों को लिखें–**

   अच्, हश्, खर्, शल्, यण्, अक्

(ख) सन्धिः

संस्कृत भाषा में दो वर्णों के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है उसे सन्धि कहते हैं। जैसे-गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः। यहाँ पूर्वशब्द (गिरि) के अन्तिम अक्षर ''इ'' का परवर्ती शब्द (इन्द्रः) के प्रथम अक्षर ''इ'' के साथ मेल होने पर 'ई' ऐसा विकार हुआ। अतः सन्धि है।